अमृत वाणी

मानव हृदय में घृणा लोभ और द्वेष वह विषैली घास हैं जो प्रेम रूपी पौधे को नष्ट कर देती है।

- सत्य साई बाबा

सर्वथा सच

संयुक्त राष्ट्र में कल्चर ऑफ पीस विषय पर हो रहे जनरल डिबेट में अपने विचार रखते हुए भारत ने सर्वथा सच कहा है कि पाकिस्तान आतंकवाद को अपनी राष्ट्रनीति का हिस्सा बना चुका है क्योंकि वह आतंकवादियों और आतंकी संगठनों के लिए सुरक्षित पनाहगार बना हुआ है। बार बार सचेत करने के बावजूद वह आतंकवाद से नाता तोड़ने को या तो तैयार नहीं है या फिर अब यह उसके बस की बात नही है क्योंकि अब वह एक तरह से आतंकियों के मर्जी अनुसार चलने को मजबूर है। अन्यथा स्वयं बुरी तरह आतंकवाद का दंश सहने के बावजूद वह स्वयं को आतंकवादियों से मुक्त करने की पहल का साहस क्यों नहीं जुटा पा रहा।

जिस जम्मू कश्मीर को पाने का सपना लिए वह दशकों से अपना सिर पीट रहा है वह तो कभी पूरा होने वाला नही है क्योंकि जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और सदा रहेगा। यह अलग बात है कि जैसा भारत ने संयुक्त राष्ट्र में कहा है कि चूंकि भारत गांधीजी की अहिंसा की नीति को मानता है इसलिए हर समस्या का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से ढूंढने का प्रयास करता है लेकिन फिर भी सहन की एक सीमा होती है। पाकिस्तान व्दारा बार बार युध्द विराम का उल्लंघन और सीमा पार से लगातार गोली बारी कर भारतीय सुरक्षा बलों के साथ साथ आम नागरिकों को नुकसान पहुंचाना सारी हदें पार कर चुका है। यही नही पाकिस्तान की मिट्टी में आतंकवादी प्रशिक्षण प्राप्त सैकड़ों घुसपैठियों को पाकिस्तानी सेना अपनी गोलीबारी के आड़ में भारत में घुसपैठ कर अशांति फैलाने में लगी रहती है। एक बार सर्जिकल स्टाइक के व्दारा भारत पाकिस्तान को उसकी हरकतों का करारा जबाव दे चुका है मगर लगता है पाकिस्तान ने उससे सबक नही ली है। यही वजह है कि सेना प्रमुख ने हाल ही में कहा है कि शायद दोबारा सर्जिकल स्ट्राइकका समय आ गया है।

आश्चर्य की बात है कि केवल भारत ही नही, पूरी दुनिया पाकिस्तान को आतंकवाद के खिलाफ सतर्क कर चुकी है। हाल में चीन में आयोजित ब्रिक्स सम्मेलन में जारी घोषणा पत्र में भी उसके आतंकवादी गतिविधियों की आलोचना पांच सदस्य देशों ने की है और संभवतः यह उसका दुर्भाग्य है कि उसके मित्र देश चीन का भी उसमें हस्ताक्षर है। अमरीका पहले ही उसे अलग थलग कर चुका है। भारत तमाम कड़ुवाहट भूलकर भी उसके साथ पड़ोसी देश के नाते आपसी संबंध बेहतर बनाने की तत्परता प्रदर्शित करता रहा है। इन सबके बावजूद अगर वह परिस्थितियों को समझकर भी नही समझना चाहता तो नतीजा भुगतने के लिए तैयार तो रहना ही होगा। वैसे भारत में सक्रिय आतंकवादियों और उनके समर्थकों के कमर तोड़ने के लिए भारत कई तरफा कदम तो उठा ही रहा है जिससे उनका अधिक दिनों तक टिके रहना मुमकिन नही है। रही बात सीमा पार से फैलाई जा रही प्रत्यक्ष अशांति की तो प्रतिदिन सेर के सवा सेर जबाव तो दिए ही जा रहे है, फिर भी अगर पानी सिर के ऊपर चढ़ा तो तदनुसार माकूल जबाव देने के लिए भी देश तैयार है।

राजकाज

रक्षा मंत्री के सामने आई चुनौती की घड़ी

पदभार संभालते ही नवनियुक्त रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण के सामने एक ऐसी चुनौती आन पड़ी है जिसका हल करना जरुरी तो है लेकिन विवादों को जन्म देने वाला भी है। दरअसल सेना अधिकारियों के प्रमोशन में कथित ष्भेदभाव व अन्याय की शिकायत के साथ आर्मी के 100 से भी ज्यादा लेफ्टिनेंट कर्नल और मेजर सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगा चुके हैं। आर्मी के अफ्सरों द्वारा दायर की गई याचिका में कहा गया है कि श्सेना और केंद्र सरकार के इस कृत्य से याचिकाकर्ताओं के प्रति अन्याय हुआ है इससे अफ्सरों के मनोबल पर असर पड़ता है जिससे देश की सुरक्षा भी प्रभावित हो रही है। दरअसल सरकार के लिए चिंता और चुनौती इस बात की है कि याचिकाकर्ताओं का कहना है कि जब तक प्रमोशन में समानता न लाई जाए तब तक सर्विसेज कोर के अफ्सरों को कॉम्बैट ऑम्र्स के साथ तैनात न किया जाए। अब ऐसे में भला कैसे काम चलेगा जबकि सीमा पर तनाव जारी हो।

तलाक पर केंद्र का कदम अनुचित

तीन तलाक मामले को लेकर जिस तरह से केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में हलफ्नामा दाखिल किया वह सरासर मुस्लिम पर्सनल लॉ पर हमला है। यह बात मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की पहली बैठक के दौरान सामने आई। वहीं बैठक इस नतीजे के साथ समाप्त हो गई कि वह सुप्रीम कोर्ट के फैसले का सम्मान करता हैए लेकिन शरीअत में किसी भी प्रकार का दखल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

हिन्दी की राष्ट्रव्यापी स्वीकार्यता

सन्तोष का विषय है कि आधुनिक संचार क्रान्ति के नये युग में मीडियाए फिल्म जगत और उद्योग सभी क्षेत्रों में हमारी प्यारी भाषा हिन्दी के प्रचार.प्रसार को अपेक्षाकृत बल मिला है । दक्षिण भारतीय भी हिन्दी के प्रति अब ज्यादा दुराग्रह नही रखतेए मगर खेद का विषय है कि आज तक किसी भी शासनकाल में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने सक्रिय प्रयास नही हुए हिन्दी दिवस के आयोजन मात्र औपचारिकता बन गये है।

14 सितम्बर 1949 को भारत के संविधन में हिन्दी को भारतीय गणराज्य की राष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय लिया गया और उसी दिन की स्मृति में संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है श्भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारतीश् भारती से महाकवि का आशय राष्ट्रभाषा हिन्दी से है। विश्व के 180 देशों में हिन्दी बोलने और समझने बाले नही है। पिछले सैंतीस वर्षो के दौरान नौ विश्व हिन्दी सम्मेलन विश्व के अनेक नगरों में आयोजित किये गये हिन्दी लेखकों एवं कोटि के विद्धानो के आपसी सामन्जस्य से सौहार्द का बातावरण निर्मित हुआ है। विदेशों में हिन्दी का प्रचार.प्रसार धीरे.धीरे गति पकड़ रहा है। मॉरीशसए फीजीए सूरीनामए त्रिनिदादए गुयानाए नीदरलैण्डए दक्षिण अफ्रीकाए नार्वेए वियतनामए जापानए अमेरिकाए जोहान्सवर्ग आदि देशों में ऐसी अनेक संस्थायें जो हिन्दी साहित्यकारों की जयन्ती मनाते हैए राम चरित मानस और गीता का पाठ करवाते है। होली और दीवाली के अवसर पर मिलन समारोह एवं कवि सम्मेलन आयोजित करते है।

मगर दुख का विषय है कि हम विदेशों में हिन्दी की इस हलचल को देखकर खुश तो हो लेते है किन्तु इस बात पर ध्यान नही देते कि 10 से 14 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित पाँच दिवसीय प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को अधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिलाने का जो संकल्प लिया था। वह अब तक अधर में ही क्यों लटका हुआ है। चेकोस्लोवाकिया के विद्धान प्रोण् ओदोलेन स्मेकल ने नागपुर में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में कहा था देश की आत्मा को समझने के लिये उसकी भाषा को समझना चाहियेमुझे जान पड़ता है कि भारत की आत्मा को समझने के लिये संस्कृत निष्ठ हिन्दी को जानना आवश्यक हैए क्योंकि वह अपने मूल रूप में संस्कृत शब्दों को आत्मसात करने के फ्ल स्वरूप समृद्धतम वर्तमान भारत की राष्ट्र भाषा है।

भारत के संविधान के भाग 17 अध्याय 1 में भारत की राजभाषा का प्रावधान है। संविधान में संकल्प 343 में स्पष्ट उल्लेख है कि भारत की राजभाषा हिन्दी और लिपि देव नागरी होगी। भारत संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिये अंको का रूप भारतीय अंको का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। संविधान निर्माताओं ने बड़ी चालाकी से राजभाषा हिन्दी के साथ पन्द्रह वर्ष तक यह प्रावधान भी रखा था। हिन्दी राजभाषा के रूप में संवेधानिक रूप से प्रतिष्ठित तो हो गई पर हिन्दी को नौकरशाहो ने समय से ही अपनी भाषा और संस्कृति को भारत में स्थापित करने का कार्य प्रारंभ कर दिया था। अंग्रेजों ने भारत में अपना शासन उज्जवल करने के लिये सबसे पहले अंग्रेजी को प्रशासन और शासन की भाषा बनायी। भारत में आजादी के पहले और बाद भी प्रशासकों ने अंग्रेजी को ही अपनी कार्य भाषा बनाया और हिन्दी की उपेक्षा कर उसके लिये मुश्किलें पैदा की है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है हिन्दी रूपी सूरज की रोशनी के बिना सवेरे की कल्पना व्यर्थ है। मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूंए परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न होए यह मै नही सह सकता।

निश्चित ही यह गर्व का विषय है भारत के दक्षिण प्रदेशों तमिलनाडुए आन्ध्रप्रदेशए कर्नाटकए केरल आदि में हिन्दी के व्यापक प्रचार प्रसार में साधु.सन्तोंए फकीरों तथा उत्तर भारत से आये मारवाड़ीए गुजराती और मुसलमान व्यापारियों ने सराहनीय हिन्दी सेवा की है। गुजरात में जन्मे महात्मा गांधी और स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ साथ कवि श्री दयाराम का योगदान हमेशा याद रहेगा। बंगाल के कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरए बंकिम चंद चटर्जी और शरतचन्द्र का हिन्दी के लिये योगदान महत्वपूर्ण रहा है। भाषा और संस्कृति दोनों एक दूसरे को प्रभावित करती है। किसी भी देश का समाज जब किसी विदेशी भाषा की संस्कृति पर आसक्त होता है तो उसके आदर्श और नैतिक मूल्य बदल जाते है। अपनी भाषा की आत्मीयताए गहनए अनुभूतियाँ और मानवीय संबंधों का आलोक किसी भी विदेशी भाषा से प्राप्त नही हो सकता हमें विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने का विरोधी नही होना चाहिये किन्तु हमे किसी भी स्थिति में विदेशी भाषा की संस्कृति से प्रभावित नही होना चाहिये। राष्ट्रीय चेतना के यशस्वी कवि माखन लाल चतुर्वेदी के अनुसार श्हिन्दी हमारे देश की भाषा की प्रभावशाली विरासत है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनुसार हिन्दी ही देश को एक सूत्र में बांध सकती है। पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने कहा है हिन्दी विश्व की महान भाषाओं में से एक है। वह करोड़ों लोगों की मातृ भाषा है और करोड़ों लोग ऐसे है जो इसे दूसरी भाषा के रूप में बोलते है।

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर पर विशेष

सर्व विदित है 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी भारत की राजभाषा घोषित की गई थी और राजकाज के लिये पन्द्रह वर्ष तक अंग्रेजी को सम्पर्क की भाषा के रूप में प्रयोग करने की स्वीकृति दी गई थीए लेकिन तब से आज तक सात दशकों में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मान नहीं मिला ।

हिन्दी की वर्तमान दशा को देखते हुए समाज को एक दिशा प्रदान करना आवश्यक है। हमे हिन्दी के संदर्भ में अपने घर से शुरूआत करना होगा। अंग्रेजी के शब्दों को नकारना होगा। बच्चों को समझाकर मम्मी.डैडीए कजिन शब्दों का प्रयोग बंद करना होगा। सामाजिक स्तर पर भी हिन्दी में परिवर्तन आवश्यक है। मोबाइल अथवा टेलीफोन पर हेलो शब्द का प्रयोग होता है जबकि प्रारंभ होना चाहिये कहिये अथवा मैं बोल रहा हूं आप कौन है घ् अथवा नमस्कार से प्रारंभ होना चाहिये। दुकानोंए शिक्षण संस्थाओंए शासकीय कार्यालयों के नाम पट हिन्दी में होना चाहिये। जलपान के समय टी के स्थान पर चायए कोकए के स्थान पर शरबत या शिकंजी कहना चाहिये। ब्रेक फास्ट के स्थान पर अल्पाहारए लंच एवं डिनर का मध्यान्ह भोजनए रात्रि भोजन कहना चाहिये। विवाह के निमंत्रण कार्ड पूर्णतया हिन्दी में छपवाने होंगे। कितनी हास्यास्पद बात है हम भगवान गणेश का चित्र लगाते है मंगल श्लोक हिन्दी में लिखते हैए किन्तु शेष सभी कार्यक्रम पति.पत्नि के नाम आदि अंग्रेजी में होते है।

केवल अंग्रेजी पुत्रों की मानसिकता बदलनी है। इसके लिये हमे पहल करनी होगी। हमे किसी से भी अंग्रेजी में पत्राचार अथवा बार्तालाप नही करना चाहिये। हम सुधर जायेंगे तो अन्य लोग हमारा अनुकरण करने लगेंगे। हमे समझना पड़ेगा कि हिन्दी का अपमान देश का अपमानए देशवासियो का अपमान भारत माता का अपमान है। उस दिन हिन्दी को लाने के लिये किसी क्रान्ति की आवश्यकता नही होगी और अगर क्रान्ति की आवश्यकता भी पड़ती है तो वह भी जनता ही करेगी। जब हम अंग्रेजी समझने से इंकार कर देंगेए जब हम अंग्रेजी पत्रों का उत्तर हिन्दी मे देना प्रारंभ कर देंगे तो सामने बाला स्वयं ही हिन्दी अपनाने विवश हो जायेगा।

-विजय कुमार जैन

(ये लेखक के अपने विचार है)

अर्थ एवं विकास के असन्तुलन से उपजी समस्याएं

सन हमने आजाद भारत के विकास में कितना सफ्र तय किया है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि हम अब भारत को कैसा बनाना चाहते हैं। हमारा सफ्र लोकतन्त्र की व्यवस्था के साये में निश्चित रूप से सन्तोषप्रद रहा है लेकिन अब हमें ऐसा भारत निर्मित करना है जिसमें सबका संतुलित विकास हो, संतुलित आर्थिक व्यवस्था हो, अर्थ का भौंडा एवं हिंसक प्रदर्शन न हो। नया इंडिया के लिए कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करने के लिये आर्थिक विसंगतियों पर नियंत्रण राष्ट्रीय संकल्प बने। नया इंडिया के बड़े स्पष्ट मापदंड भी हों, जैसे सबके लिए दो वक्त की रोटी, तन ढंकने के लिये वस्त्र एवं सिर पर छप्पर। नया इंडिया हमारे डीएनए में रचे-बसे मानवतावादी मूल्यों को समाहित करे और गरीब और अमीर के बीच की दूरियों को पाटा जाये। नया इंडिया का समाज ऐसा हो, जो तेजी से बढ़ते हुए संवेदनशील भी हो। ऐसा संवेदनशील समाज, जहां पारंपरिक रूप से वंचित लोग, देश के विकास प्रक्रिया में सहभागी बनें और अपना समग्र विकास करें। ऐसे नया इंडिया का निर्माण हो जहां हर व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीने का हक मिले, कोई भी गरीबी के कारण मरने को विवश न हो, चाहे वह किसान हो या मेहनत करने वाला मजदूर।भारत का मूल निवासी होने वाले नागरिक को अपने ही देश में परायापन, तिरस्कार, शोषण, अत्याचार, धर्मान्तरण, अशिक्षा, साम्प्रदायिकता और सामाजिक एवं प्रशासनिक दुर्दशा के शिकार होना पड़े, यह एक बड़ी त्रासदी है। धनाढ्य लोग मानवीय गरिमा को प्रतिदिन तार-तार करते हुए दिखाई दे, यह विकास नहीं, विनाश का द्योतक है।

भारत में प्रति व्यक्ति सालाना औसत आय पैंतालीस हजार बताई जाती है। गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले लगभग कुल आबादी के पैंतीस प्रतिशत लोगों की सालाना आय पांच-दस हजार रुपये से अधिक नहीं है। दीपावली, होली, क्रिसमस, गुरुपर्व हो या नय वर्ष के स्वागत के जश्न- महानगरों ही नहीं छोटे कस्बों तक मे जो प्रदर्शन होते हैं, उनमें बड़े लोगों की बात छोड़ दे तो एक सामान्य आय वाले बड़े वर्ग के लोग भी हजारों रुपये खर्च करते हैं। ऐसे ही वैभव प्रदर्शन के आयोजनों में सहारा परिवार सबसे आगे रहता है? तब उसका आदर्श भारत निर्माण का सपना कहां चला जाता है?सबसे बड़े धनाढ्यों में शुमार होने वाला कोई व्यक्ति पांच प्राणियों के रहने के लिये पांच हजार करोड़ की लागत से घर बनाता है तो कोई करोड़ों-करोड़ो रुपये एक शादी में खर्च करके क्या जताना चाहते हैं। वे इतनी बड़ी रकम से कोई आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सकते थे, जैसा कि अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, वॉरिन बफेट, कम्प्यूटर जगत के बादशाह बिल गेट्स, अजीम प्रेमजी आदि ने किया है। इन लोगों ने दुनिया से गरीबी दूर करने, सेवा एवं जनकल्याण के लिये, शिक्षा और चिकित्सा के लिये अपने अर्जित धन का विसर्जन किया है। संतुलित समाज निर्माण के सपने को आकार देने की दिशा में कदम बढ़ाये है।

'वैष्णव जन तो तेने कहिए' भजन में नरसी मेहता ने एक बात अच्छी प्रकार से कह दी है। 'पर दुःखे उपकार करे' कह कर वे रुक गए होते, तो वैष्णव जनों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। 'पर दुःखे उपकार करे तोए मन अभिमान न आणे रे' कह कर नरसी मेहता ने हम सब में छिपे सूक्ष्म अहं को विगलित करने की चेतावनी दी है। पैसे का अहं तो शैतान से भी ज्यादा खतरनाक होता है। विषमता गरीबी को बढ़ा कर ही बढ़ सकती है और साथ ही जब हाथ में एकाएक जरूरत से ज्यादा पैसा आता है तो भोंडापन एवं अहं अपने आप बढ़ता है। इस प्रकार के पैसे और उसके कारण जो चरित्र निर्माण होता है उससे देश मजबूत नहीं बल्कि कमजोर होता है। इस प्रकार बढ़ते नव-धनाढ्यों की लम्बी सूची और उनके भोंडेपन को किसी भी शक्ल में विकास तो कहां ही नहीं जा सकता। इसी तरह के नव-धनाढ्यों और धन का हिंसक एवं भौंडा प्रदर्शन करने वालों के लिये आचार्य श्री तुलसी ने 'निज पर शासन फिर अनुशासन' एवं 'संयमः खलु जीवनम्- संयम ही जीवन है' का उद्घोष दिया था।

भगवान महावीर ने कहा था कि संसार में लोक कल्याण, विश्वशांति, सद्भाव और समभाव के लिये अपरिग्रह का भाव जरूरी है। यही अहिंसा का मूल आधार है। परिग्रह की प्रवृत्ति अपने मन को अशांत बनाती है और हर प्रकार से दूसरों की शांति को भंग करती है। लेकिन आज बड़ा राष्ट्र छोटे राष्ट्र को हड़पना चाहता है, हर बड़ी मछली छोटी मछली को निगल रही है। धनवान व्यक्ति परिग्रह और अहं प्रदर्शन के द्वारा असहायों एवं कमजोरों के लिये समस्याएं पैदा करता है। यह संसाधनों पर कब्जा ही नहीं करता बल्कि उसका बेहूदा प्रदर्शन करता है, जिससे मानसिक क्रोध बढ़ता है और हिंसा को बढ़ावा मिलता है। महावीर ने इसलिये एक-दूसरे के सहायक बनने की बात कही। उन्हीं के दिये उपदेशों से निकला शब्द है 'विसर्जन'। समतामूलक समाज निर्माण के लिये जरूरी है कि कोई भी कितना ही बड़ा व्यवसायी बने, लेकिन साथ में अपरिग्रहवादी भी बने। अर्जन के साथ विसर्जन की राह पर कदम बढ़ाये। डा. अच्यूता सामंता ने कलिंगा विश्वविद्यालय के रूप में उच्च शिक्षा के बड़े गढ़ स्थापित किये तो उससे होने वाली आय को आदिवासी गरीब बच्चों के कल्याण में विसर्जित किया। 12 हजार से अधिक गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने वाले सामंता आज भी एक चट्टाई पर सोते हैं उनका कोई आशियाना नहीं है। इसी भांति गणि राजेन्द्र विजयजी अपनी संतता को सार्थक करते हुए आदिवासी कल्याण के लिये अनेक योजनाएं संचालित कर रहे हैं, उनका भी कोई भव्य आश्रम नहीं है। ऐसे ही प्रयत्नों से हम भारत को विकसित होते हुए देख सकते हैं।

गांधीजी ने अहमदाबाद में आश्रम शुरू किया, तब एक समय आर्थिक तंगी के कारण आश्रम बन्द करने की नौबत आयी। गांधीजी मंथन कर रहे थे और आश्रम बन्द होगा, यह बात निश्चित लग रही थी। एक शाम एक सर्वथा अनजाना व्यक्ति आया और रुपयों की एक थैली देकर, साबरमती के अन्धकार में अदृश्य हो गया। आज तक यह पता नहीं लग सका कि 'व्यक्ति' कौन था। आश्रम अगर चालू रह सका, तो उस व्यक्ति के कारण।निःस्वार्थ, सहज, सात्विक उपकार ऐसा होता है। सही रूप में विसर्जन, बिना किसी अपेक्षा के। ऐसा उपकार मनुष्य पर प्रकृति पल-पल करती रहती है। सूर्य,

पृथ्वी, वायु, आकाश एवं जंगलों की तरफ से सतत् होता रहता है--तभी हमारा जीवन है/हम जिन्दा हैं।

रेल में या बस में थोड़ा सिकुड़ कर अगर आप किसी के लिए जगह बना देते हैं तो एक विशेष प्रकार के आनन्द और संतोष की अनुभूति होती है। स्मरण कीजिए, भूतकाल में कई बार आपके लिए किसी ने इसी प्रकार जगह बना दी थी। आज आप उनका नाम व चेहरा भी भूल गये होंगे। यह दुनिया भी एक रेल है। यहां भी ऐसे ही किसी अनजान के लिए 'थोड़ा संकोच करें बिना किसी अपेक्षा के', पेड़ अगर फ्ल देता है तो क्या आपसे 'थैंक्यू' की भी अपेक्षा करता है?' सचमुच देने का सुख अप्रतिम है। कृतज्ञता अहंकार का विसर्जन है। उपकार का आनन्द अनुभव करना है तो आपने जो किया उसे जितनी जल्दी ही भूल जाएं और आपके लिए किसी ने कुछ किया, उसे कभी न भूलें, यही नये भारत को आदर्श स्थिति प्रदत्त कर सकेगा। आज जरूरत है हर समर्थ आदमी अपने से कमजोर का सहायक बने। तकलीफ तब होती है जब इसका उल्टा होता है।

- ललित गर्ग-

(ये लेखक के अपने विचार है)

जीवन से बड़ी मातृभूमि

सुकरात को मृत्युदंड सुनाया जा चुका था। सुकरात के अनेक शिष्य ऐसे थे जो उन पर अपना सर्वस्व समर्पित करने के लिए तैयार थे। उन्हीं में से एक थे करोटो। करोटो किसी तरह जेल के अंदर सुकरात से मिलने जा पहुंचे। वे बोले, 'गुरुजी, मैंने सब व्यवस्था कर ली है। आपको जेल से बाहर निकालने में किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी। इसके बाद आप दूसरे देश में जाकर सुखपूर्वक अपना जीवन बिता पाएंगे।' करोटो की बातें सुनकर सुकरात बोले, 'प्रियवर ! बेहद खेद की बात है कि मैं तुम्हारे इस आग्रह को स्वीकार नहीं कर सकता। मैंने जिस धरती पर जन्म लिया है, जिसकी हवा में मैं अभी तक सांस ले रहा हूं, उस पावन मातृभूमि को मौत के डर से छोड़ कर क्या कायरों की तरह भागकर विदेश चला जाऊं? मृत्यु तो एक न एक दिन अवश्य आएगी, फिर क्यों न मैं अपने प्राणों का उत्सर्ग माटी में ही करूं, जिस देश ने मुझे प्राण दिए। गुरु के इस फैसले को सुनकर करोटो नतमस्तक हो गया।'

- रेनू सैनी